"सितार के वादन–शिल्प पर अन्य वाद्यों का प्रभाव–एक अध्ययन"

संगीत विषय में पी.एच.डी. की उपाधि हेतु शोध
विषय की प्रस्तावित रूपरेखा

2012–2013

निर्देशिका / विभागाध्यक्ष

प्रो. (श्रीमती) सुभद्रा कुमारी सतसंगी
कला संकाय (संगीत विभाग)

शोधार्थी

अंजुल मित्तल

कला–संकाय
दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनीवर्सिटी)
दयालबाग, आगरा

“सितार के वादन–शिल्प पर अन्य वाद्यों का प्रभाव–एक अध्ययन”

संगीत कला एक ऐसी अमूर्त कला है, जो मानव हृदय ही नहीं वरन् चराचर जगत् के प्रत्येक कण को स्पंदित करने की क्षमता रखती है। वर्तमान काल में इसका क्षेत्र केवल लालित्य मनोरंजन तक ही सीमित नहीं है, वरन् मनोवैज्ञानिक, वैज्ञानिक जगत् के साथ ही साथ आध्यात्मिक जगत् से सम्बन्धित अनेकों प्रयोग हो रहे हैं एवं उनके माध्यम से उपचार आदि भी किए जा रहे हैं।

संगीत में प्रमुख तीन धाराएं अथवा विधाएं समाहित हैं– गीत, वाद्य एवं नृत्य। भारतीय संगीत में यद्यपि संगीत की गेय विधा का विशेष स्थान है, परन्तु वाद्य संगीत भी अपनी विशिष्ट उपलब्धि एवं साहित्य के कारण संगीत जगत में समृद्ध है। संगीत के मूल तत्वों की दृष्टि में वाद्य कला भी वास्तविक रूप में संगीत की पूर्णरूपेण प्रतिनिधि कला है। इसमें स्वर और लय का एक छत्र राज्य है। इसमें न तो गान की भाँति काव्य अपेक्षित है और न नृत्य की भाँति अंग संचालन ही।

“वैदिक वाड्.मय में वाद्यों का विस्तृत विवरण प्राप्त नहीं होता है, परन्तु जो भी विवरण मिलता है उससे केवल वाद्यों के विकास के विषय में ही हम कुछ जान सकते हैं। वादन शिल्प के विषय में कुछ भी उन ग्रन्थों में नहीं दर्शाया गया है।

संहिताओं तथा उपनिषदों आदि में वाद्यों के संबंध में छिटपुट उल्लेख पाया जाता है। ब्राह्मण तथा उपनिषद् काल में संगीत की काफी उन्नति दिखाई देती है। अतः यह निश्चित रूप से स्वीकार किया जा सकता है कि ‘गात्र वीणा’ (वास्तविक वीणा के अभाव में हाथ की उँगलियों के पोरों में वीणा के स्वरों की कल्पना करके सामगान का अभ्यास करना) से आगे भी वीणा में अनेक परिवर्तन हुए होंगे। शतपथ–ब्राह्मण, तैत्ररीय–ब्राह्मण आदि ग्रन्थों में वीणा के तन्तुओं को किन स्वरों में मिलाया जाये तथा वीणा का वादन किसके साथ किया जाये–इसको दर्शाया गया है, परन्तु उनमें भी वादन–शिल्प का निरूपण नहीं प्राप्त होता है।

ऐतरेय आरण्यक ग्रन्थ (आनन्द आश्रम आवृत्ति, पृ. 222) में वीणा की महत्ता की व्यापक चर्चा हैं। इसमें वादन के लिये प्रयुक्त यंत्र के लिए 'नखी' (मिजराब) शब्द का प्रयोग किया जाता है। परन्तु वीणा के वादन शिल्प का निरूपण इसमें भी नहीं हैं

सूत्रकाल, पुराण काल, रामायण काल एवं महाभारत काल के आध्यात्मिक ग्रन्थों में विभिन्न प्रकार की वीणाओं की, विभिन्न प्रसंगों में चर्चा की गयी है, परन्तु वीणा के वादन शिल्प को कहीं भी दर्शाया नहीं गया है।"[1]

संगीत से सम्बन्धित प्रामाणिक ग्रन्थ नाट्यशास्त्र एवं संगीत रत्नाकर दोनों में ही वाद्य वर्गीकरण, उनकी बनावट एवं उनकी वादन शैली के विषय में उल्लेख प्राप्त होते हैं।

'भरत नाट्य शास्त्र' में वीणा–वादन शिल्प का निरूपण विस्तृत रूप से प्राप्त होता है। संगीत के शास्त्रीय विवेचन के जो भी ग्रन्थ उपलब्ध है, उन सब में भरत के नाट्यशास्त्र का नाम सर्व प्रमुख आता है और वहीं आज तक सब संगीत ग्रन्थों का आधार रहा है। यद्यपि इसके नाम से ऐसा लगता है कि यह ग्रन्थ मुख्यतः नाट्य से सम्बन्ध रखता है, किन्तु नाट्य के अंग के रूप में इसमें संगीत का भी विवेचन किया गया है। यह भी सत्य है कि इसमें संक्षिप्त शैली में संगीत के सभी मूलभूत विषयों का निरूपण हुआ है। इसके 36 अध्यायों में से 6 अध्याय संगीत को दिये गये हैं तथा इसमें वर्णित विषयों की विविधता को देखने से ज्ञात होता है कि इन 6 अध्यायों का परिमाण किसी प्रकार भी न्यून नहीं है।

नाट्यशास्त्र में 28 वें अध्याय से 33वें अध्याय तक (6 अध्यायों में) संगीत सम्बन्धी विषयों का विवरण प्राप्त होता है। वाद्यों के सन्दर्भ में नाट्यशास्त्र के 29 वें अध्याय में जातियों का रसानुकूल प्रयोग, वाद्य प्रयोग, स्वर, वर्ण, अलंकार, गीतालंकार विधि, वर्णविहीन अंलकार, चार धातु, तीन वृत्तियाँ, वाद्य के लक्षण, विविध प्रकार की वीणाएँ तथा उनकी वादन विधि का वर्णन प्राप्त होता है।

---

[1] रजनी भट्नागर, "सितार वादन की शैलियाँ" कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली 2006, पृ. 12

संगीत के अत्यन्त विशाल और व्यापक क्षेत्र, विषय के स्पष्ट, सूक्ष्म और व्यवस्थित निरूपण तथा प्रामाणिकता की दृष्टि से संगीत के शास्त्र ग्रन्थों में नाट्यशास्त्र के पश्चात शांरगदेव कृत संगीत रत्नाकर का अप्रतिम स्थान है। संगीत रत्नाकर एक ऐसा मानक ग्रंथ है जिसके बिना संगीत के प्राचीन ग्रंथों और उनमें ग्रथित–सूत्रित सिद्धान्तों को समझना लगभग असंभव है। संगीत रत्नाकर की विषयवस्तु में संगीत के तीनों अंगों–गीत, वाद्य और नृत्य का समावेश हुआ है और सभी का सांगोपांग निरूपण है।

संगीत रत्नाकर ग्रंथ में कुल 7 अध्यायों में विषय विभाजित हुआ है, जिनके नाम इस प्रकार है– स्वरगताध्याम, रागविवेकाध्याय, प्रकीर्णकाध्याय, प्रबन्धाध्याय, तालाध्याय, वाद्याध्याय और नर्तनाध्याय।

6वें वाद्याध्याय में चतुर्विध वाद्यों (तत्, अवनद्ध, घन, सुषिर) की बनावट, वादनशैली, निर्गीत, वीणा और वंश पर रागालप्ति एवं अवनद्ध में वाद्य प्रबन्ध (रचनाएँ) दिये गये हैं।

मर्हिष भरत ने वाद्यों को चार वर्गों में विभाजित किया है 1. तत् अर्थात तंत्रीयुक्त वाद्य, 2. अवनद्ध अर्थात् चर्मविद्ध वाद्य, 3. घन वाद्य, 4. सुषिर वाद्य।

उपर्युक्त सभी प्रकार के संगीत वाद्यों के वर्गीकरण को मुख्य रूपसे दो वर्गों में विभक्त कर सकते हैं। प्रथमतः स्वर वाद्य जिनमें तत्, वितत्, सुषिर व आधुनिक Electronic वाद्य भी आते है। जिनमें नाद के प्रमुख गुण तारता, तीव्रता एवं गुणों के माध्यम से सांगीतिक अभिव्यक्ति प्रस्तुत करते हैं अथवा राग एवं धुनों की प्रस्तुति की जाती है।

द्वितीयतः वे वाद्य आते हैं जो गायन, वादन एवं नर्तन को प्रमुख रूप से लय प्रदान करने का कार्य करते हैं– जिनमें अवनद्ध एवं घन वाद्य आते हैं।

"वादन की क्रिया के आधार पर तत् वाद्यों को चार उपवर्गों में विभाजित किया जा सकता है–

1. उंगुलियों से छेड़कर बजाया जाने वाला वर्ग जैसे– स्वर मण्डल, तम्बूरा आदि।

2. कोंण या त्रिकोण (मिजराव) से बजाये जाने वाले वाद्य जैसे– सितार, सरोद, रूद्रवीणा, विचित्र वीणा, तंनजोरी वीणा आदि।

3. गज से रगड़कर बजाये जाने वाले वाद्य जैसे– सारंगी, रावण हत्था, इसराज, दिलकबा आदि।

4. डंडी से प्रहारकर बजाये जाने वाले वाद्य जैसे– सन्तूर, कानूनादि।"[1]

शोधार्थी स्वयं सितार की छात्रा है अतः उसकी तत् वाद्यों से सम्बन्धित कार्य करने की विशेष रुचि रही है। इस सन्दर्भ में शोधार्थी ने सन्दर्भित साहित्य (शोध–प्रबन्ध) का सर्वेक्षण किया हैं परिणामतः निम्न शोध तत् वाद्यों के सम्बन्ध में प्राप्त हुये हैं–

1. रेखा निगम ने इन्दिरा कला संगीत विश्व विद्यालय खैरागढ़ से 'सितार की उत्पत्ति का विस्तृत विवेचन तथा सितार के बाज का विकास क्रम– 18वीं शताब्दी से वर्तमान काल के सन्दर्भ में विषय पर शोध प्रस्तुत किया है।'

2. प्रकाश महाडिक ने इन्दिरा कला संगीत विश्व विद्यालय खैरागढ़ से शोधकार्य हेतु "भारतीय संगीत के तंत्री वाद्यों की वादन–शौलियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन" विषय पर शोधकार्य प्रस्तुत किया है।

3. शिल्पी नाहर ने, वनस्थली विश्व विद्यालय से "उत्तर भारतीय संगीत के प्रमुख तंत्री वाद्य–सितार में प्रयुक्त बंदिश विविधता का विचारात्मक अध्ययन विषय पर शोध कार्य प्रस्तुत किया है।"

4. वी. इन्दु ने दयालबाग डीम्ड विश्व विद्यालय से "वीणा, संगीत–रत्नाकर के सन्दर्भ में" विषय पर लघु शोध किया है। जिसमें संगीत रत्नाकर में वर्णित वीणा के विविध प्रकारों का वर्णन किया गया है।

---

[1] डॉ० लाल मणि मिश्र, "भारतीय संगीत वाद्य" भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण–2002, पृ. 47

5. रश्मि वैश्व ने दिल्ली विश्व विद्यालय दिल्ली से लघु शोध प्रबन्ध के रूप में "तत् वाद्यों और उनकी तकनीकों का अध्ययन" प्रस्तुत किया है।

6. सम्प्रति सुनिता आर्या, "भारतीय शास्त्रीय संगीत में तंत्री वाद्यों की परम्परा परिष्करण एवं संवर्धन–एक समीक्षात्मक अध्ययन" विषय पर कार्य कर रही हैं।

उक्त विषयों के अन्तर्गत प्रथम शोध प्रबन्ध में सितार की उत्पत्ति तथा सितार के बाज के विकास क्रम की चर्चा है। द्वितीय शोध में वादन शैलियों की चर्चा है, तृतीय शोध में सितार की बंदिशों की विविधता के विषय में बताया गया है। लघु शोध प्रबन्ध में संगीत रत्नाकर में वर्णित वीणाओं पर चर्चा है।

उपर्युक्त विषयों में प्राचीन तत् वाद्यों की वादन शैली की चर्चा तो है, परन्तु उपर्युक्त विश्लेषण का अभाव है एवं वर्तमान प्रचलित तत् वाद्यों की वादन शैली का प्रमुख आधार, विश्लेषण या तुलनात्मक स्वरूप प्रस्तुत नहीं किया गया है।

उपर्युक्त सन्दर्भ में शोधार्थी की यह जिज्ञासा हैः–

1. सितार की वादन शैली पर नाट्यशास्त्र एवं संगीत रत्नाकर में वर्णित तत वाद्यों की वादन शैली का क्या प्रभाव है?
2. या सितार की वादन शैली का आधार नाट्यशास्त्र व संगीत रत्नाकर में वर्णित वीणा के प्रकारों पर ही अवलम्बित है?
3. या उपर्युक्त वीणा के करणों का ही विकसित रूप है?
4. या उसमें नवीन वादन तकनीकी का विकास या संवर्द्धन किया गया है?
5. क्या सितार का वादन शिल्प उत्तर भारत में प्रचलित अन्य तत् वाद्यों की वादन शैली से भी प्रभावित है?

उपर्युक्त जिज्ञासा के संदर्भ में शोधार्थी ने निम्न विषय पर शोध– कार्य करने का निश्चय किया।

समस्या कथन– "सितार के वादन–शिल्प पर अन्य वाद्यों का प्रभाव–एक अध्ययन"

उद्देश्य–

1. नाट्यशास्त्र एवं संगीतरत्नाकर में वर्णित वाद्य एवं उनका वर्गीकरण।

2. सितार के वर्तमान वादन शिल्प का अध्ययन।

3. नाट्य शास्त्र में वर्णित वीणा प्रकारों का सितार के वादन शिल्प का प्रभाव

4. संगीत रत्नाकर में वर्णित वीणा प्रकारों का सितार के वादन शिल्प का प्रभाव

5. वर्तमान प्रचलित तत् वाद्यों से तुलना–

   (क). वीणा (ख). सरोद

समस्या में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या

वादन

किसी वाद्य पर आघात करके या अन्य किसी माध्यम से आघात करना वादन कहलाता है।

"**भारतीय साहित्य संग्रह के अनुसार**, वादन–पुं०(सं० वद्(कहना)+णिच्+ल्युट–अन) 1. कहने या बोलने की क्रिया 2. बाजा बजाना 3. बाजा। वाद्य। 4. वादक ।"[1]

शिल्प

"**भारतीय साहित्य संग्रह के अनुसार,** शिल्प पुं० (सं० शिल+पक्) हाथ से काम करने का हुनर । दस्तकारी । हस्तकला।"[2]

---

[1] http://pustak.org/home.php?word

[2] http://pustak.org/home.php?word

“**समांतर कोश के अनुसार, शिल्प**– कला कर्म, कला शैली, चीड़, रचनाविन्यास, हस्तशिल्प।

कलाकर्म– कलाकारिता, कला सृजन, प्रणयन, फनकारी, रचना, रचना कर्म, शिल्प, सृजनं

कला शैली– अंग, अंदाज, अदा, क़लम (चित्रकला), घराना, चाल, ट्रीटमैण्ट (अँ), ढंग, ढब, तरीका, तर्ज़, तौर–तरिका, पद्धति, प्रकार, रंग, रचनाशैली, रीति, विशिष्टता, वृत्ति, शिल्प शैली, सूरत, स्टाइल (अँ), हिस्सा।

रचना विन्यास– काम, खजन, गॅढ़ाव, गठाव, गठन, गढ़त, गढ़न, गुॅधावट, गॅूथ, गॅूधा, घड़न, टैक्शचर (अँ) ढंग, ढब, तराश, तर्ज़, तानाबाना, नक्शा, निर्मिति, बनत, बनावट, बुनाई, बुनाबट, भरावट, योजना, विनिर्मित, विन्यास, विरचिति, शक्ल, शिल्प, संघटना, संरचना।”[1]

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी अपना कार्य वादन शैली के अर्थ रूप में केवल वादन की पद्यति, विशिष्ठता, शिल्प शैली को ही केन्द्रित मानकर करेगी।

परिसीमांकन

समय और साधन की सीमा के कारण शोधार्थी तत् वाद्यों के वादन शिल्प का सितार के वादन शिल्प पर हुये प्रभाव का ही अध्ययन करेगी।

अध्ययन विधि
1. सर्वेक्षणात्मक
2. साक्षात्कार

उपकरण
1. टेपरिर्कोडर
2. पुस्तकालय आदि।

अध्ययन के सोपान

प्रथम अध्याय – **भूमिका**– संगीत में वाद्य–संगीत का महत्त्व एवं संदर्भ साहित्य

[1] अरविन्द कुमार कुसुम कुमार, “समान्तर कोष”, सन्दर्भ खण्ड, अनुक्रम खण्ड, नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, नई दिल्ली, दिसम्बर 1996, पृ. 1594

द्वितीय अध्याय – वाद्य एवं उनका वर्गीकरणः–

1. नाट्य शास्त्र के अनुसार
2. संगीत रत्नाकर के अनुसार
3. पं. लाल मणि मिश्र के अनुसार

तृतीय अध्याय – सितार की बनावट एवं वादन शिल्पः–

1. मैहर घराना (पं० रवि शंकर)
2. इटावा घराना (उ० विलायत खाँ)
3. सैनिया घराना (पं० देबू चौधरी)
4. इन्दौर घराना (उ० अब्दूल हलीम ज़ाफर)

चतुर्थ अध्याय – नाट्यशास्त्र में वर्णित वीणा प्रकारों का सितार के वादन शिल्प पर प्रभाव।

पंचम अध्याय – संगीत रत्नाकर में वर्णित वीणा प्रकारों का सितार के वादन शिल्प पर प्रभाव।

षष्ठम अध्याय – वर्तमान प्रचलित तत् वाद्यों से तुलनाः–

1. वीणा
2. सरोद

सप्तम अध्याय – निष्कर्ष

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मिश्र, डॉ० लालमणि "भारतीय संगीत वाद्य", भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण–2002

2. चौधरी, सुभद्रा "शारंगदेव कृत–संगीत रत्नाकर,'सरस्वती' व्याख्या और अनुवाद सहित" तृतीय खण्ड, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2006

3. शास्त्री, बाबू लाल शुक्ल "हिन्दी नाट्य शास्त्र", चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, तृतीय वि.सं.–2057, तृतीय संस्करण–2000

4. भार्गव, डॉ0 अंजना "भारतीय संगीत शास्त्रों में वाद्यों का चिंतन" कनिष्का पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2002

5. भट्नागर, रजनी "सितार वादन की शैलियाँ" कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2006

6. कुमार, अरविन्द, कुसुम "समान्तर कोष" अनुक्रम खंड, संदर्भ खण्ड, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, ए–5, नई दिल्ली, दिसंबर 1996।

7. www.banasthali.org/…music…./resea…..

8. http://pustak.org/home.php?word

9. शोध प्रबन्ध–

शोधार्थी– पी.एस. रश्मि, शिक्षा संकाय, डी.ई.आई., "वर्तमान संगीत शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में वीणा एवं सितार की लोकप्रियता का समीक्षात्मक अध्ययन, 2000"